श्री राधा-कृपाकटाक्ष स्तवराज

मुनीन्द्र-वृन्द वन्दिते त्रिलोक-शोक-हारिणि
प्रसन्न वक्त्र-पङ्कजे निकुञ्ज-भू-विलासिनि।
व्रजेन्द्र-भानु-नन्दिनि व्रजेन्द्र-सूनु-संगते
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥1॥

अशोक-वृक्ष-वल्लरी-वितान-मण्डप-स्थिते
प्रवाल-बाल पल्लव-प्रभारूणांध्रि-कोमले।
वराभय स्फुरत्-करे प्रभूत-सम्पदालये
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥2॥

अनङ्ग-रङ्ग-मंगल-प्रसङ्ग-भङ्गुरभ्रुवोः
सविभ्रमै ससम्भ्रमं दृगन्त-बाण-पातनैः।
निरन्तरं वशीकृत-प्रतीत-नन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥3॥

तडित-सुवर्ण-चम्पक-प्रदीप्त-गौर-विग्रहे
मुख-प्रभा-परास्त-कोटि-शारदेन्दुमण्डले।
विचित्र-चित्र-संचरच्चकोर-शाव-लोचने
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥4॥

मदोन्मदातियौवने प्रमोद-मान-मण्डिते
प्रियानुराग-रञ्जिते कला-विलास-पण्डिते।
अनन्य-धन्य-कुञ्ज राज्य-काम-केलि-कोविदे
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥5॥

अशेष-हाव-भाव-धीर-हीर-हार-भूषिते
प्रभूतशातकुम्भ-कुम्भ-कुम्भि-कुम्भ-सुस्तनि।
प्रशस्त-मन्द-हास्य-चूर्ण-पूर्ण-सौख्य-सागरे
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥6॥

मृणाल-बाल-वल्लरी-तरङ्ग-रङ्ग-दोर्लते
लताग्र-लास्य-लोल-नील-लोचनावलोकने।
ललल्ल लुलन् मिलन मनोज्ञ-मुग्ध-मोहनाश्रये
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥7॥

सुवर्ण-मालिकाञ्चित-त्रिरेख-कम्बु-कण्ठग
त्रिसूत्र-मङ्गलीगुण त्रिरत्न-दीप्त-दीधिते।
सलोल-नीलकुन्तले-प्रसून-गुच्छ-गुम्फिते
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥8॥

नितम्ब-बिम्ब-लम्बमान-पुष्प-मेखला-गुणे
प्रशस्त-रत्न-किङ्किणी-कलाप-मध्य-मञ्जुले।
करीन्द्र-शुण्ड-दण्डिका-वरोह-सौभगोरुके
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥9॥

अनेक-मन्त्र नाद-मञ्जु-नूपुरार वस्खलत्-
समाज-राजहंस-वंश-निक्वणातिगौरवे।
विलोल-हेमवल्लरी-विडम्बि-चारू-चङ्क्रमे
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥10॥

अनन्त-कोटि-विष्णुलोक-नम्र-पद्मजार्चिते
हिमाद्रिजा-पुलोमजा-विरिञ्चजा-वरप्रदे।
अपार-सिद्धि-वृद्धि-दिग्ध-सत्पदाङ्गुली-नखे
कदा करिष्यसीह माम् कृपाकटाक्षभाजनम् ॥11॥

मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेद-भारतीश्वरि प्रमाण-शासनेश्वरि।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद-काननेश्वरि
ब्रजेश्वरि ब्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तुते ॥12॥

इतीदमद्भुतं स्तवं निशम्य भानुनन्दिनी करोतु संततं जनं कृपाकटाक्ष भाजनम्।
भवेत्तदैव संचित-त्रिरूप-कर्म-नाशनं भवेत्तदा ब्रजेन्द्र-सूनु-मण्डल-प्रवेशनम्॥13॥